



को आयतो को मानते नही और वही है जो झूठे है

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا  
 مَنْ أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ  
 وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا  
 فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ  
 عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾



जिस किसी ने अपने ईमान के पश्चात अल्लाह के साथ कुफ्र किया -सिवाय उसके जो इसके लिए विवश कर दिया गया हो और दिल उसका ईमान पर सन्तुष्ट हो - बल्कि वह जिसने सीना कुफ्र के लिए खोल दिया हो, तो ऐसे लोगो पर अल्लाह का प्रकोप है और उनके लिए बड़ी यातना है



ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا



لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ  
 أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ  
 يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ  
 إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاتَهُ وَيَحْذَرُكُمْ  
 اللَّهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ



ईमानवालों को चाहिए कि वे ईमानवालों से हटकर इनकारवालों को अपना मित्र (राजदार) न बनाएँ, और जो ऐसा करेगा, उसका अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं, क्योंकि उससे सम्बद्ध यही बात है कि तुम उनसे बचो, जिस प्रकार वे तुमसे बचते हैं। और अल्लाह तुम्हें अपने आपसे डराता है, और अल्लाह ही की ओर लौटना है





مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولِهِ فَإِنْ  
 تَبَّيْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ  
 فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ  
 وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ



सार्वजनिक उद्घोषणा है अल्लाह और उसके  
 रसूल की ओर से, बड़े हज के दिन लोगों के  
 लिए, कि "अल्लाह मुशरिकों के प्रति जिम्मेदार  
 से बरी है और उसका रसूल भी। अब यदि तुम  
 तौबा कर लो, तो यह तुम्हारे ही लिए अच्छा  
 है, किन्तु यदि तुम मुह मोड़ते हो, तो जान लो  
 कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा  
 सकते।" और इनकार करनेवालों के लिए एक  
 दुखद यातना की शुभ-सूचना दे दो





प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए क्या अवयव करते  
हो? अल्लाह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान



तै

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ  
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ  
الْحَكِيمُ ۝ ٢



अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी  
क़समों की पाबंदी से निकलने का उपाय  
निश्चित कर दिया है। अल्लाह तुम्हारा संरक्षक  
है और वही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है



وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ  
حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ  
اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ  
عَنْ بَعْضٍ ۝ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ



كَلِّبًا فَعَلِيهِ كَذِبًا وَإِنْ يَكْ صَادِقًا  
 يُصِيبُكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ  
 لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ



28



28

फ़िरऔन के लोगों में से एक ईमानवाले व्यक्ति ने, जो अपने ईमान को छिपा रहा था, कहा, "क्या तुम एक ऐसे व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से खुले प्रमाण भी लेकर आया है? यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का ववाल उसी पर पड़ेगा। किन्तु यदि वह सच्चा है तो जिस चीज की वह तुम्हें धमकी दे रहा है, उसमें से कुछ न कुछ तो तुमपर पड़कर रहेगा। निश्चय ही अल्लाह उसको मार्ग नहीं दिखाता जो मर्यादाहीन, बड़ा झूठा हो



قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ بِذُنُوبِكُمْ



अपन नक आर धमपरायण हान आर लागी  
के मध्य सुधारक होने के सिलसिले में अपनी  
कसमों के द्वारा अल्लाह को आड़ और निशाना  
न बनाओ कि इन कामों को छोड़ दो। अल्लाह  
सब कुछ सुनता, जानता है



لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي  
أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا  
كَسَبْتُمْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ



२२०

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी ऐसी कसमों पर नहीं  
पकड़ेगा जो यूँ ही मुँह से निकल गई हो,  
लेकिन उन कसमों पर वह तुम्हें अवश्य  
पकड़ेगा जो तुम्हारे दिल के इरादे का नतीजा  
हों। अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील



है

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ



लिख लो"

وَمَكْرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ

الْمَكْرِينَ ﴿٥٤﴾



और वे चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया और अल्लाह उत्तम तोड़ करनेवाला



है

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ

وَرَأْفِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ

كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ

الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ

إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا

كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾





## Hadith and Sira

Sahih Bukhari (52:269) - *"The Prophet said, 'War is deceit.'" The context of this is thought to be the murder of Usayr ibn Zarim and his thirty unarmed companions by Muhammad's men after they were "guaranteed" safe passage (see Additional Notes below).*

Sahih Bukhari (49:857) - *"He who makes peace between the people by inventing good information or saying good things, is not a liar." Lying is permitted when the end justifies the means.*

Sahih Bukhari (84:64-65) - Speaking from a position of power at the time, Ali confirms that lying is permitted in order to deceive an "enemy." The Quran defines the 'enemy' as "disbelievers" (4:101).

Sahih Muslim (32:6303) - *"...he did not hear that exemption was granted in anything what the people speak as lie but in three cases: in battle, for bringing reconciliation amongst persons and the narration of the words of the husband to his wife, and the narration of the words of a wife to her husband (in a twisted form in order to bring reconciliation between them)."*

Sahih Bukhari (50:369) - Recounts the murder of a poet, Ka'b bin al-Ashraf, at Muhammad's insistence. The men who volunteered for the assassination used dishonesty to gain Ka'b's trust, pretending that they had turned against Muhammad. This drew the victim out of his fortress, whereupon he was brutally slaughtered.

From Islamic Law:

Reliance of the Traveler (p. 746 - 8.2) - *"Speaking is a means to achieve objectives. If a praiseworthy aim is attainable through both telling the truth and lying, it is unlawful to accomplish through lying because there is no need for it. When it is possible to achieve such an aim by lying but not by telling the truth, it is permissible to lie if attaining the goal is permissible (N:i.e. when the purpose of lying is to circumvent someone who is preventing one from doing something permissible), and obligatory to lie if the goal is obligatory... it is religiously precautionary in all cases to employ words that give a misleading impression..." (See the Permissible Lying section on the [Sharia](#) page for more)*

"One should compare the bad consequences entailed by lying to those entailed by telling the truth, and if the consequences of telling the truth are more damaging, one is entitled to lie."

---

## Notes

The Hadith makes it clear that Muslims are allowed to lie to unbelievers in order to defeat them or protect themselves. There are several forms:

**Taqiyya** - Saying something that isn't true as it relates to the Muslim identity. This is a Shiite term: the Sunni counterpart is Muda'rat.

**Kitman** - Lying by omission. An example would be when Muslim apologists quote only a fragment of verse 5:32 (that if anyone kills "it shall be as if he had killed all mankind") while neglecting to mention that the rest of the verse (and the next) mandate murder in undefined cases of "corruption" and "mischief."